BA Part III (H)
Paper V

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

Lecture III

गोत्र (विशेषताएं) => गोत्र वास्तव में समरक्तीय परिवारों का एक संकलन है जिसके सदस्य अपने को एक वास्तविक या काल्पनिक सामान्य पूर्वज के वंशज मानते हैं। इस स्वरूप में गोत्र की विशेषताओं को इस प्रकार समझा जा सकता है

1. समान पूर्वज = समान पूर्वज ही गोत्र व्यवस्था का प्रमुख आधार है। गोत्र के सभी सदस्य यह मानते हैं कि उनकी उत्पत्ति किसी एक समान पूर्वज से हुई है। यह पूर्वज वास्तविक मानव हो सकता है या काल्पनिक अन्य प्राणी सजीव हो सकता या निर्जीव। अगर वे एक पीढ़ी के हो तो आपस में समान पीढ़ी को भाई-बहन मानते

2020-8-13 09:23

है, ऊपर की पीढ़ी के समान गोत्र को माता-पिता के रूप में मानते हैं और नीचे की पीढ़ी के समान गोत्र को संतान मानते हैं।

2. बहिर्विवाही – गोत्र की एक प्रमुख विशेषताओं में से एक बहिर्विवाही होना है। एक ही गोत्र के लोग आपस में विवाह नहीं कर सकते। क्योंकि सभी सदस्य अपने को एक समान पूर्वज की संतान मानते हैं अपने को भाई बहन मानते हैं। समान गोत्र वालों का विवाह - सम्बन्ध अनाचार माना जाता है, इसलिए इसे नहीं होने देते। विवाह अपने से बाहर के गोत्र में होता है। इसके चलते एक गोत्र का विवाह क्षेत्र अत्यन्त सीमित हो जाता है।

2020-8-13 09:23